अमर
चित्र
कथा

सुदामा

संख्या ३

Rs. 7.00



भागवत पुराण के दसवें स्कन्ध में भगवान् कृष्ण का जीवन-चरित्र—उनका जन्म, बाल-काल, किशोरावस्था तथा प्रौढावस्था—प्रस्तुत किया गया है। इसकी कथाएँ अत्यन्त रोमांचक हैं और साथ ही उन लोगों को प्रेरणा देती हैं तथा सही मार्ग दिखाती हैं जो जीवन को सार्थक बनाना तथा ईश्वर को प्राप्त करना चाहते हैं।

सुदामा भगवान् कृष्ण के बालपन के अभिन्न मित्र तथा अनन्य भक्त थे। उनका जीवन-चरित्र युग-युग से बालकों को लुभाता आ रहा है। यह भी इस दसवें स्कन्ध में आता है। वैराग्य के सिद्धान्त को सुदामा ने भली भाँति समझा है। कृष्ण के प्रति सुदामा के स्नेह पर अगणित भजनों की रचना की गयी है। उनकी कथा दीन-हीनों के विश्वास तथा श्रद्धा को सम्बल प्रदान करती आ रही है। सुदामा अत्यन्त निर्धन थे तथापि सुखी थे। उनकी पत्नी भी घर में बच्चे होने तक सर्वथा संतुष्ट थी।

उसने अपने पति को कृष्ण के पास जाने को राजी किया जो सुदामा के बचपन के मित्र थे और बडे समृद्ध तथा कृपालु थे। और सुदामा जब उनके पास गये तो क्या हुआ—यही इस चित्र-कथा में प्रस्तुत है।

Published by H.G. Mirchandani for India Book House Pvt. Ltd., Mahalaxmi Chambers, 22, Bhulabhai Desai Road, Bombay 400 026 and printed by him at IBH Printers, Marol Naka, Mathuradas Vissanji Road, Andheri (East), Bombay 400 059.

Editor: Anant Pai   Retold by: Kamala Chandrakant   Artwork: Prabhakar Khanolkar
Translation: Meena Khanna

सुदामा

सुदामा निर्धन ब्राह्मण-पुत्र था। कृष्ण से उसकी गहरी मित्रता थी।



उनकी भेंट गुरु सांदीपनि के आश्रम में हुई थी।

सुदामा, कृष्ण को यज्ञशाला ले जाओ।

जो आज्ञा, गुरुदेव।

यज्ञशाला में –

तुम्हारा वैदिक ऋचाओं का पाठ तो अत्यन्त शुद्ध है।

मैंने अपने पिता जी से सीखा है। गुरु सांदीपनि की उनसे बड़ी मित्रता थी।

सुदामा अक्सर कृष्ण के साथ अभ्यास करता था।



एक दिन सांदीपनि की पत्नी ने दोनों लड़कों से कहा –



उन्हें जंगल में गये कुछ ही देर हुई थी कि...



... भयंकर आंधी आयी।



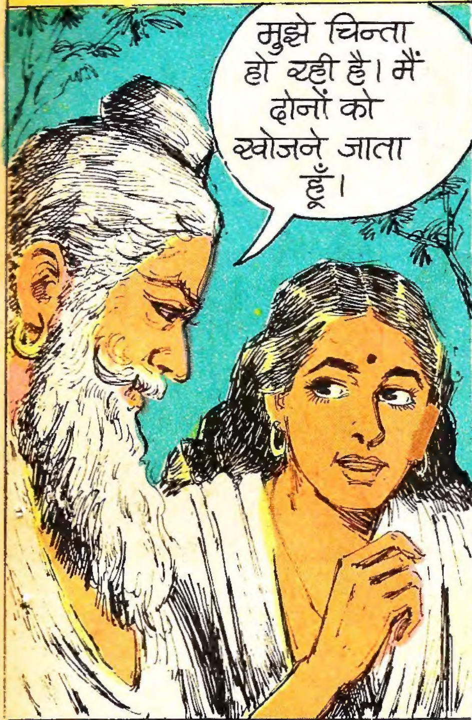




बहुत देर बाद, रात पड़ने के बाद तूफ़ान रुका।



बहुत रात गये तक जब दोनों लड़के लौट कर नहीं आये–



बहुत ढूँढने के बाद लड़के उन्हें मिले।



गुरु ने उन्हें वरदान दिया–



जब उनका अध्ययन काल पूरा हो गया–





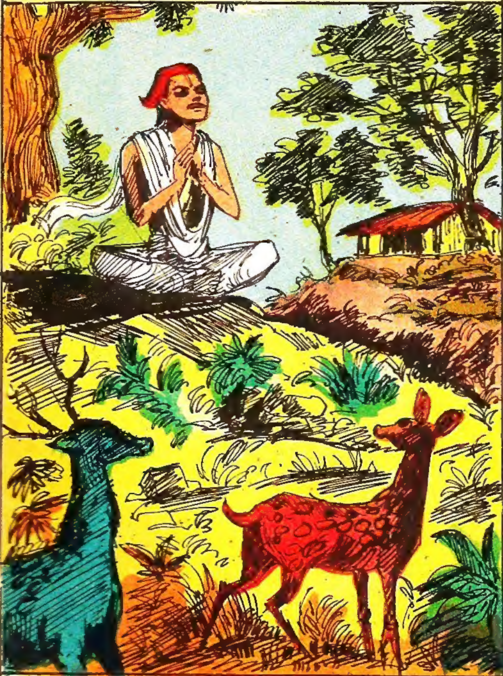




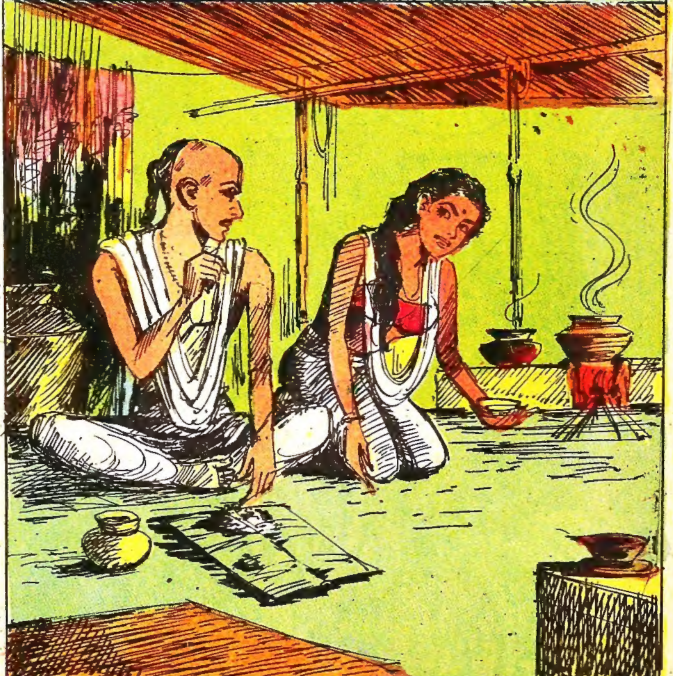
कई वर्ष बीत गये। कृष्ण द्वारिका के सिंहासन पर बैठे। उन्हों ने साक्षात् लक्ष्मी सदृश राजकुमारी रुक्मिणी से विवाह किया।

सुदामा ने एक ब्राह्मण कन्या से विवाह किया।

सांसारिक सुखों से वे विरक्त थे...



...और निर्धनता में जीवन काट रहे थे।



सभी लोग सुदामा से स्नेह करते थे। कोई उनका शत्रु न था।



उनकी पत्नी जैसा जीवन बिता रही थी उससे बहुत दुखी थी।



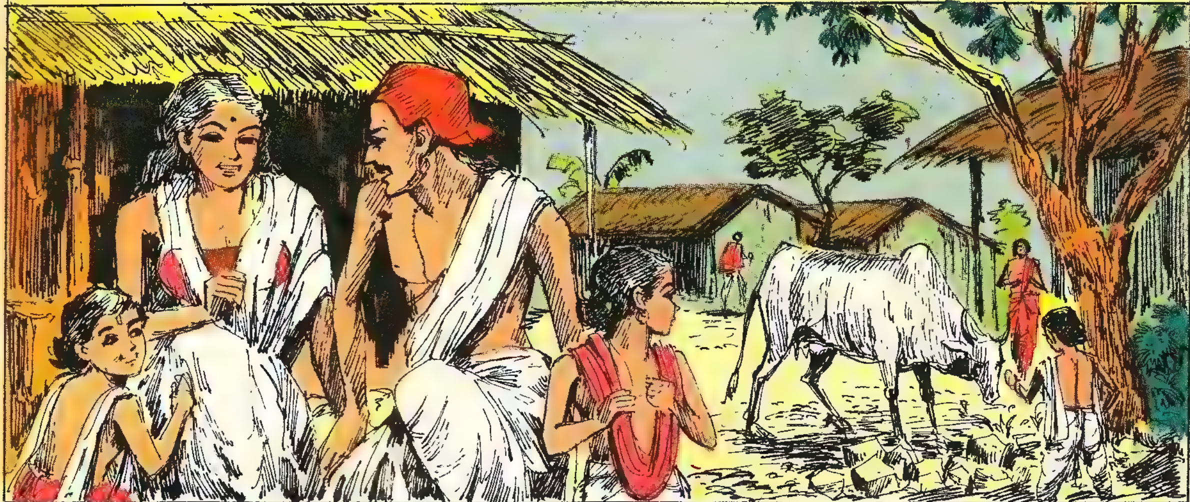
फिर भी धीरज से सब-कुछ सहन करती थी।



क्योंकि पति को वह देवता तुल्य मानती थी।



फिर उनके बाल-बच्चे हुए।
उन्हें भी निर्धनता और अभाव में रहना पड़ा।







उस रात जब बच्चे सो गये—

मेरी धृष्टता क्षमा करें, स्वामी—

डरो मत, देवी— मन की बात खुल कर कहो।





उसकी आँखों के आगे द्वारिका की समृद्धि का चित्र उभर आया।





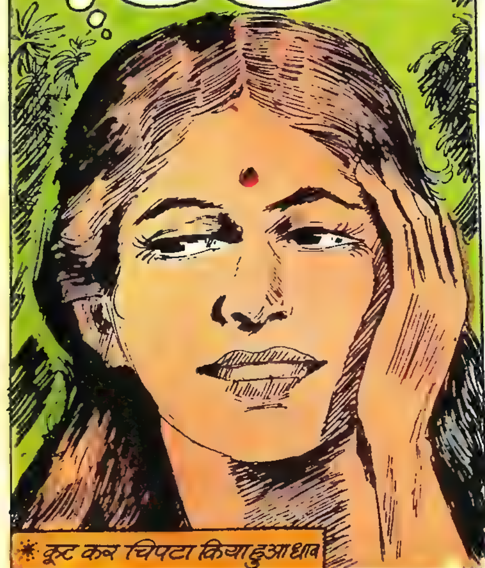

मैं जा कर मिल अवश्य लूँगा परन्तु कुछ माँगूँगा नहीं।


सुदामा की पत्नी प्रसन्नता से फूली नहीं समा रही थी।
कृष्ण से भेंट करने मात्र से हमारा कल्याण हो जायेगा। मुझे इसी से संतोष है, स्वामी।


मेरे मन में नयी आशा ने जन्म लिया है।


भगवान् कृष्ण अंतर्यामी हैं– घट-घट की जानते हैं। मेरे पति को कुछ कहने की आवश्यकता ही नहीं होगी– वे स्वयं दे देंगे।


दोनों के मन में एक ही विचार आया –
मैं पति को ख़ाली हाथ नहीं भेज सकती।
घर में कुछ है – जो मैं कृष्ण के लिए भेंट ले जाऊँ ?


सुदामा की पत्नी को तुरन्त एक बात याद आयी।
मेरे पति कहते थे कि कृष्ण को पोवा (चिड़वा)* बहुत अच्छा लगता था।
* कूट कर चिपटा किया हुआ धान


सुदामा को भी याद आया कि कैसे कृष्ण उनसे छीन कर पोवा खाया करते थे।

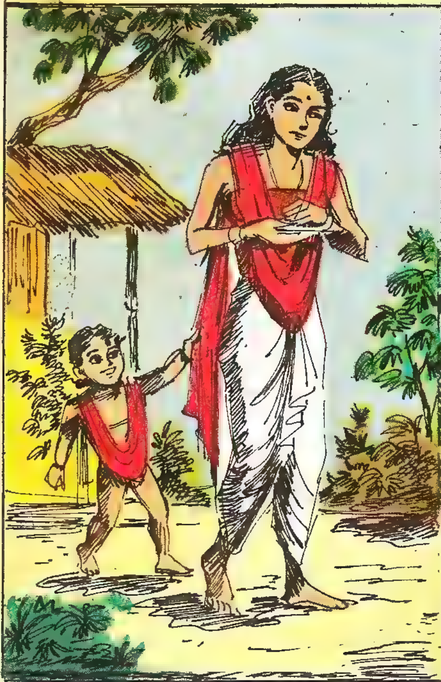




मेरे पति अपने किसी मित्र से मिलने जा रहे हैं सो कुछ भेंट में ले जाना है। आप थोड़ा-सा पोवा देंगी? मेरे यहाँ खत्म हो गया है।

तुम्हें कभी किसी चीज़ को मना किया है मैंने?

सुदामा की पत्नी पोवा ले कर आयी।



पोवा बाँधने के लिए उसे और कुछ नहीं मिला–



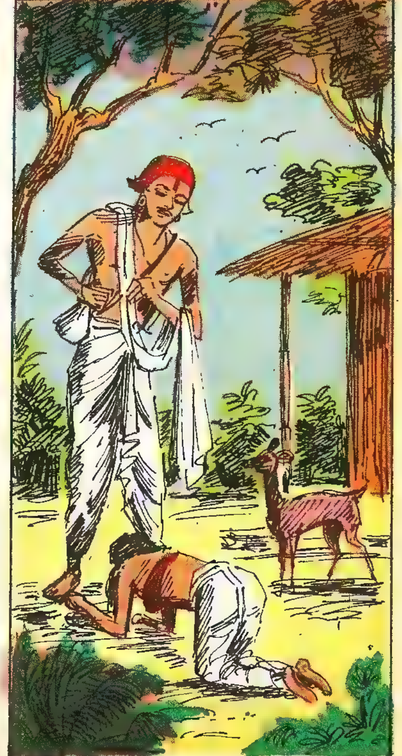
तो उसने अपने वस्त्र का ही एक टुकड़ा फाड़ा–



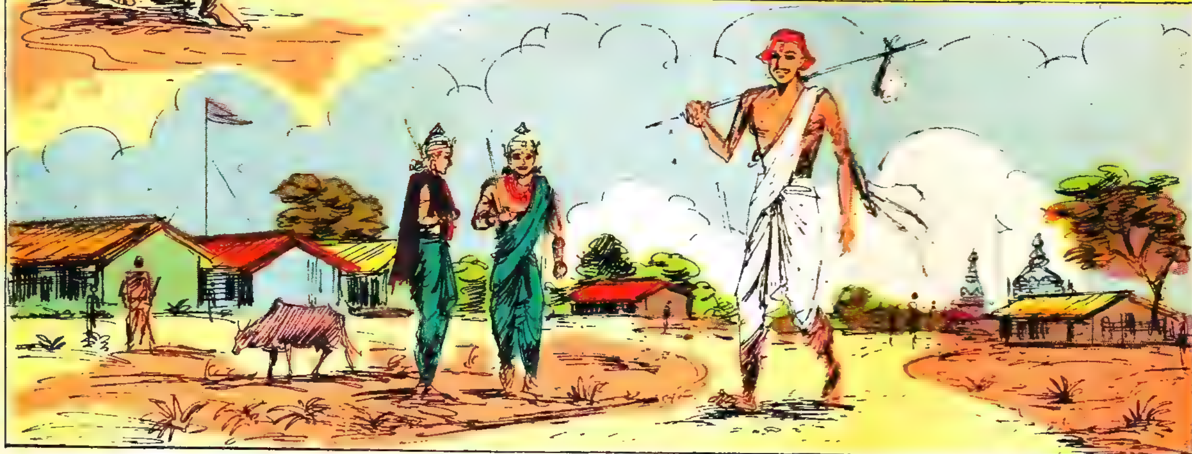
और पोवा उसमें बाँध कर सुदामा को दे दिया।



सुदामा ने पत्नी से विदा ली–




— और द्वारिका की ओर चल दिये।

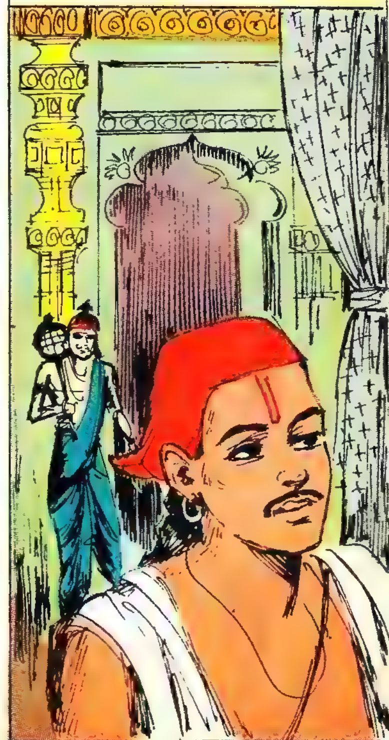

मार्ग लंबा अवश्य था परन्तु मनोरम था।

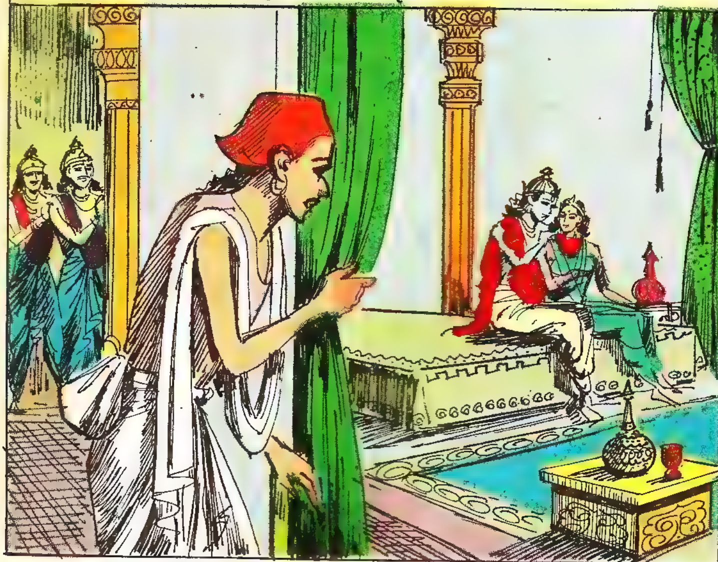

सुदामा को पता भी नहीं चला कि कब वे द्वारिका पहुँच गये।

वे राजमहल के द्वार पर आये। द्वार खुला था– वे बिना रोक-टोक अन्दर चले गये।



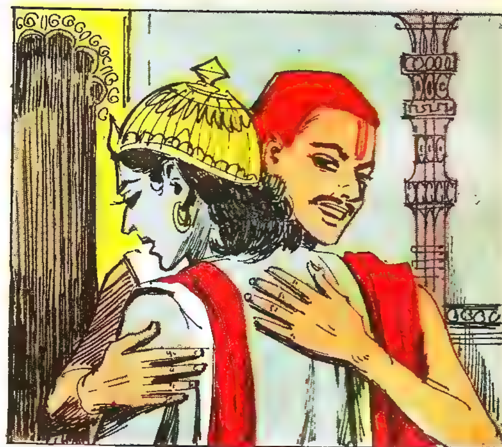





और एक जगह उन्हें कृष्ण और रुक्मिणी दिखायी दिये।


देखिये – यह कौन है?


मेरा परम मित्र – सुदामा!




यही है वह मित्र जिसकी मैंने तुमसे अनेक बार चर्चा की है।







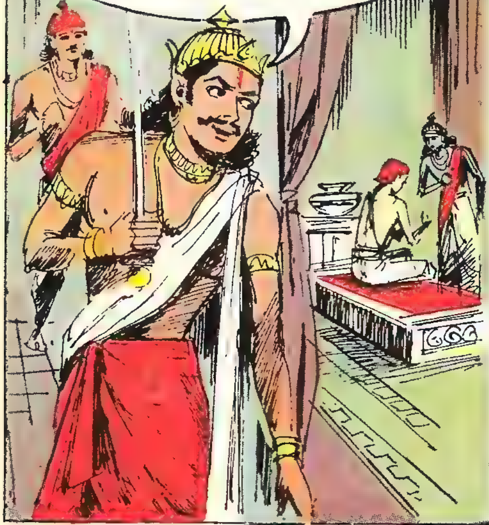
कृष्ण ने सुदामा के थके-हारे शरीर पर चन्दन का लेप किया।



और उन्हें सुपारी खिलायी।

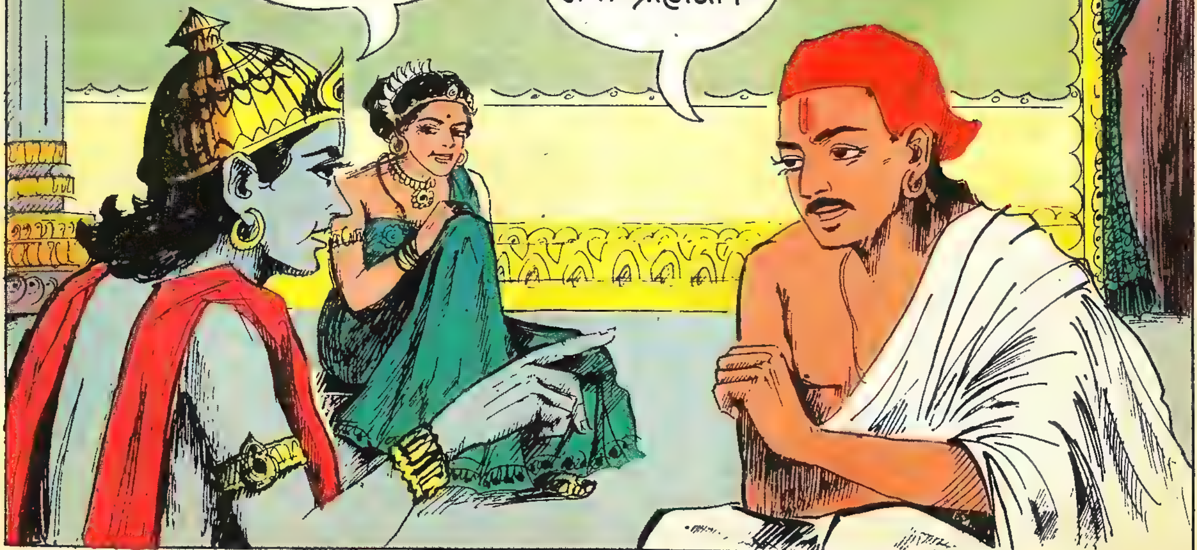


महल के नौकर-चाकर हैरान थे।





इस प्रकार सुदामा की थकान उतरी।

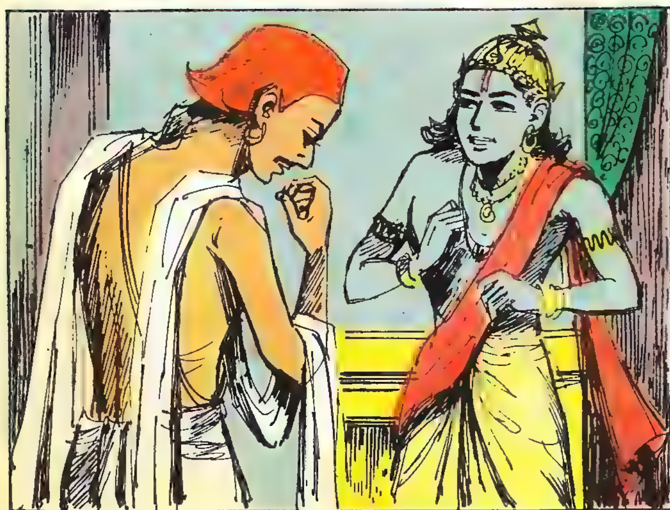


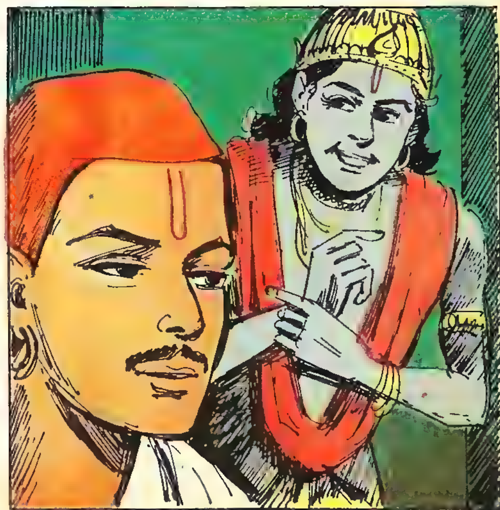


तुम गृहस्थ तो हो तथापि तुम्हारा मन सब चीज़ों से विरक्त है। भाभी को इससे कोई शिकायत तो नहीं?
शिकायत कभी की तो नहीं।



कृष्ण की दृष्टि सुदामा की कमर में बंधी पोटली पर पड़ी।
अहा! लगता है तुम मेरे लिए कुछ भेंट लाये हो!

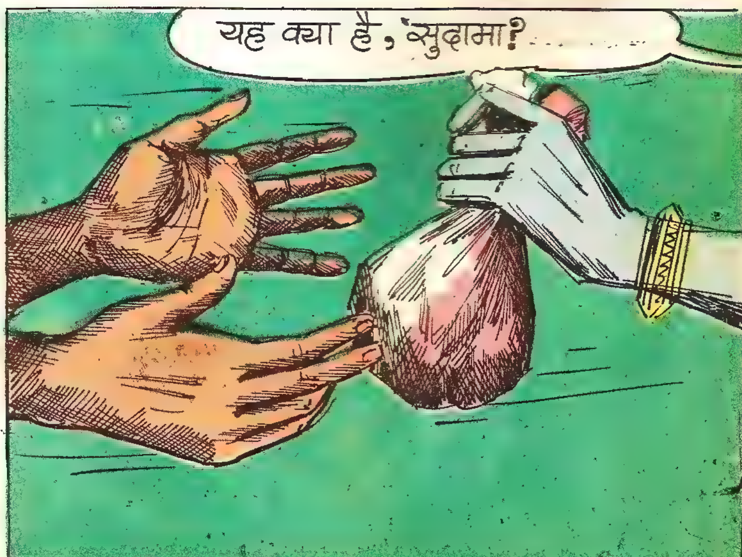





कृष्ण समझ गये कि सुदामा को पोटली देने में लज्जा का अनुभव हो रहा है। वे बोले-
तुच्छ से तुच्छ वस्तु भी यदि मुझे प्रेम के साथ भेंट की जाये तो मेरे लिए वह उन बहुमूल्य वस्तुओं से भी अमूल्य है जो प्रेम की भावना के बिना दी जाती हैं।


जिसे किसी चीज की कमी नहीं उसे चिथड़े में बंधी यह पोटली कैसे दूँ!


यह अपने लिए कुछ माँगने के विचार से नहीं आया है। आया है पत्नी तथा मेरे प्रति अपने स्नेह के कारण!

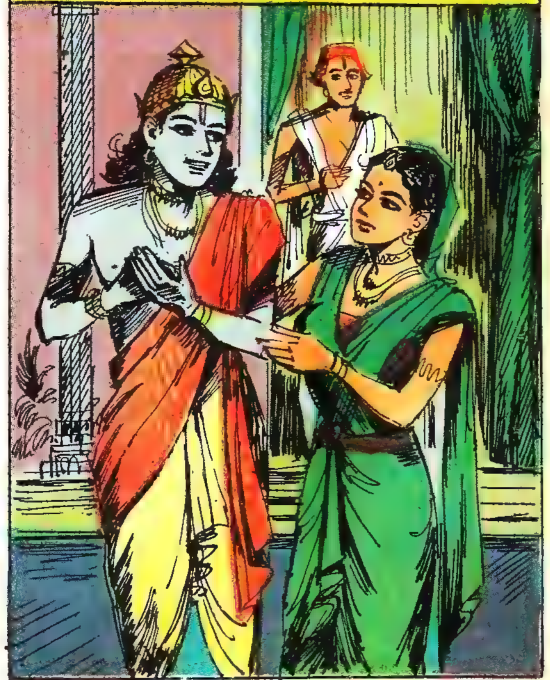

यह क्या है, सुदामा?......

पोवा!






जब वे दूसरी मुट्ठी भरने लगे–
इतना काफ़ी है, स्वामी !


लक्ष्मी का अवतार होने के नाते सम्पत्ति के वितरण पर नियंत्रण रखना रुक्मिणी का कर्त्तव्य था।

भगवन्, आपने जो एक मुट्ठी फाँक ली वही इनकी इस लोक की तथा परलोक की भी आवश्यकताएँ पूरी करने को पर्याप्त है।

ये क्या कहती हैं? मैं समझा नहीं।






अगले दिन सुदामा ने कृष्ण और रुक्मिणी से विदा ली।


घर पहुँच कर हमें भूल मत जाना, सुदामा।

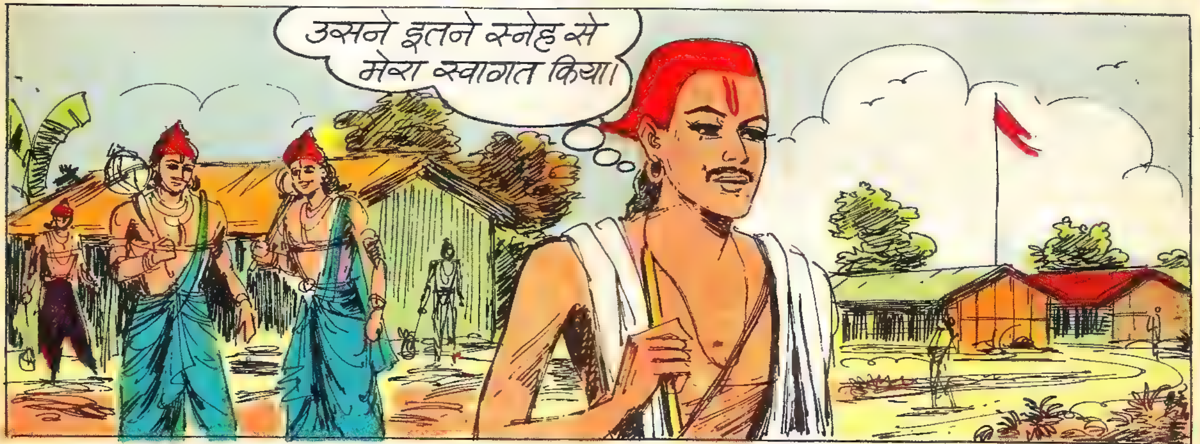




मार्ग में सुदामा द्वारिका की बातें सोचते जाते थे।











सुदामा के पाँव दुखने लगे।

उसने मेरा आदर-सत्कार किया— मेरे पाँव धोये।





परन्तु जब वे अपने घर के निकट पहुँचे-



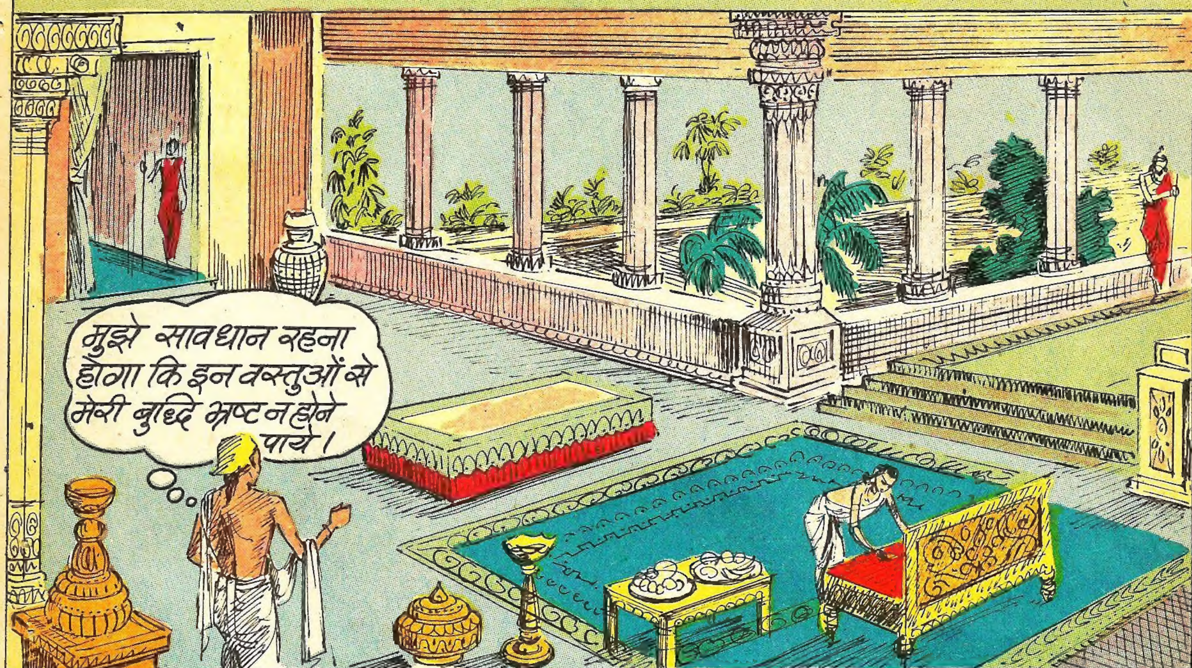
पत्नी व बच्चे उनके स्वागत को आये परन्तु सुदामा उन्हें पहचान ही न सके।

मेरे स्वामी, मुझे पहचानते नहीं?

पिता जी, देखिये ये मेरे नये-नये कपड़े।

तब सुदामा की समझ में सारी बात आयी।

बड़े प्रेम से दिये गये मुट्ठी भर पोवा के बदले उसने संसार का ऐश्वर्य मुझे दे दिया।



स्वामी, मुझे बताइये- यह सब कैसे हुआ? आपने कृष्ण से क्या माँगा?

विश्वास करो, मैंने कुछ नहीं माँगा था। उन्होंने प्रेम बरसाया मुझ पर। परन्तु मैं उनसे क्या माँगता, कैसे माँगता! उन्हें खुद सब पता है कि हमारे मन में क्या है!

और वे दोनों भगवान् कृष्ण की अपार कृपा और प्रेम का निरंतर गुणगान करते रहे।



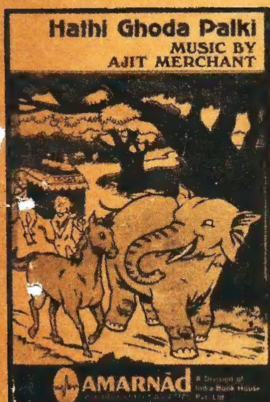
AMARNĀD

PRE-RECORDED CASSETTES

PRESENTS

Children's Songs & Stories

117	HALLA GULLA (English)	The Funfoos
142	HATHI GHODA PALKI (Hindi)	Ajit Merchant
156	CHHIP ANE MOTI (Gujarati)	
166	SONGS FOR YOUNG ONES (English)	Roshan Treasuryvala
169	THE MAGIC RING (English)	"
171	CHANDAMAMA (Hindi)	Datta Davjekar
174	GHATTI PHOO (Marathi)	Yashwant Dev
226	DADI KI KAHANIYAN (Hindi)	Ravi Mishra
401	KRISHNA-SUDAMA-DHRUVA (English)	Amar Chitra Katha
402	7 TALES OF BIRBAL (English)	"
403	9 TALES OF BIRBAL (English)	"
404	7 TALES OF PANCHATANTRA (English)	"
451	KRISHNA-SUDAMA-LUV KUSH-DHRUVA (Hindi)	"
452	8 TALES OF PANCHATANTRA (Hindi)	"
453	4 TALES (Hindi)	"
545	TALES FROM PANCHATANTRA-1 (English)	Chandiramani
701	MODEL READING OF ENGLISH LESSONS	Angrezi Prachar Sabha
909	DISCO MUSICAL STORIES (English)	Sharda
927	GHODA CHALALAY TAP TAP TAP (Marathi)	Lilawati Bhagwat
454	AAJICHYA GOSHTI (Marathi)	"

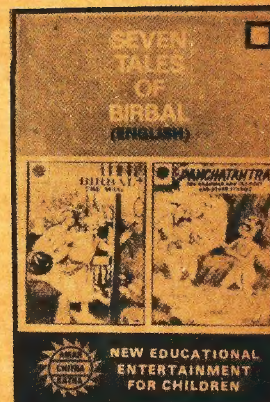




AMARNAD pre-recorded cassettes re-capture, in sound and music, the rich cultural heritage of India. They cover a wide range of programmes in devotional, light classical and folk music. These programmes are rendered by leading and young, promising Artistes. Over 400 programmes available at all leading music shops. Guaranteed against manufacturing defects. All programmes are generally C-60, unless otherwise specified.

Price per cassette (postpaid) : C-60 = Rs. 40/-





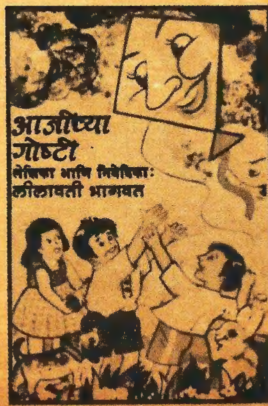
For complete list write to

India Book House Pvt. Ltd.

12-H, Dalamal Park, 223, Cuffe Parade, Colaba,
Bombay-400 005 Phone : 215615 Gram : INDBOOK









IBH-501
Reprint: April 1987